No. of Printed Pages : 2

एम.एच.डी.-1

00221

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसंबर, 2011

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **10x2=20**

(क) का सिंगार ओहि बरनौं, राजा। ओहिक सिंगार ओहि पै छाजा।।
प्रथम सीस कस्तूरी केसा। बलि बासुकि का और नरेसा।।
भौंर केस वह मालति रानी। बिसहर लुरे लेहिं अरघानी।।
बेनी छोरि झार जौं बारा। सरग पतार होइ अंधियारा।।
कोंवर कुटिल केस नग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बेसारे।।
बेधे जनौं मलयगिरि बासा। सोस चढ़े लोटहिं चहुं पासा।।
घुंघरवार अलकैं विषभरी। सँकरे प्रेम चहैं गिउ परी।।

(ख) जसोदा हरि पालनैं झुलावैं।
हलरावै दुलराई मल्हावै जोई सोई कछु गावै।।
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया काहै न आनि सुबावै।
तु काहै नहिं वेगहिं आवै तोकौ कान्ह बुलावै।।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत है कबहुँ अधर फरकावै।

सोवत जानि मौन है कै रहि करि करि सैन बातबै।।
इहिँ अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरैं गावैं।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ सो नँद भामिनि पावै।

(ग) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित दुति होई।
कहत नटत रीझत, खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात।

(घ) फागु के भीरे अभीरन तें गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीन पितंबर कंमर तें सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ कह्यो मुसकाइ भला फिरि आइयौ खेलन होरी।।

2. विद्यापति की काव्य गत विशेषताएँ बताइए। 10

3. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर प्रकाश डालिए। 10

4. कबीर की भाषा के विभिन्न रूपों पर विचार कीजिए। 10

5. सूफी मत के सन्दर्भ में जायसी का मूल्यांकन कीजिए। 10

6. सूर काव्य में प्रेमाभिव्यक्ति के स्वरूप से अवगत कराइए। 10

7. सामंती रूढ़ियों के प्रति मीरा की विद्रोह भावना को विश्लेषित कीजिए। 10

8. मुक्तक काव्य-परंपरा में बिहारी का स्थान निर्धारित कीजिए। 10